Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

खासी लोककथाओं में प्रगतिशीलता के तत्व

सेतु कुमार वर्मा
पीएचडी, हिंदी विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय

Article Info
Volume 4, Issue 3
Page Number : 264-267
Publication Issue :
May-June-2021
Article History
Accepted : 01 June 2021
Published : 15 June 2021

शोध सार (Abstract): सांस्कृतिक प्रगतिशीलता एक ऐसी अवधारणा है। जो समाज में व्याप्त रूढ़ी को छोड़ सामूहिक हित को ध्यान में रखते हुए अपनाये गए व्यवहारों से प्रचलित होते हैं। दुनिया की हर संस्कृतियों में रूढ़ी और प्रगतिशीलता के तत्त्व होते हैं। वाचिक परंपरा में लोककथाएँ इनकी वाहक होती हैं। खासी समाज मातृवंशीय सामाजिक परंपरा का पालन करने वाला समाज है। खासी परंपरा में वाचिक साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। इस शोध पत्र में हम खासी लोककथाओं के माध्यम से खासी समाज में प्रगतिशीलता के तत्वों का अध्ययन करेंगे।

संकेत शब्द (Keywords): खासी, लोककथा, प्रगतिशीलता, संस्कृति, पूर्वोत्तर

विषय विवेचन : प्रगतिशीलता की अवधारणा सांस्कृतिक रूढ़ी को चुनौती देते हुए सामूहिक और मानवीय हितों को स्थापित करती है। किसी संस्कृति में प्रचलित परम्पराएं कई बार रूढ़ी का रूप ले लेते हैं। ऐसी में कुछ संस्कृतियाँ उनका पालन करते रहते हैं और कुछ सामूहिक रूप से उनको त्यागने का प्रयास करती हैं। आदिवासी और ट्राइबल समुदायों में पारंपरिक रूप से कई ऐसे तत्त्व हैं जो बेहद प्रगतिशील हैं। ऐसा लगता है कि इनकी स्थापना आम लोगों के हित को ध्यान में रख के किया गया है। इस शोध पत्र में हम खासी लोककथाओं में प्रगतिशीलता का अध्ययन कुछ बिन्दुओं के आधार पर कर रहे हैं।

स्त्री की पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हकों का अतिक्रमण कोई नई बात नहीं है। आज के समय में विभिन्न समाजों में स्त्री के दमन के खिलाफ आवाजें उठने लगीं हैं। इस दौर में अपने आस-पास पितृसत्तात्मक समाजों से घिरे रहने पर भी खासी समाज का अपनी मातृवंशीयता को बरकरार रखना बहुत महत्व रखता है। खासी जनजाति उन गिने चुने समुदायों में से है जो आज भी मातृवंशीय सामाजिक व्यवस्था का पालन करती हैं। "मातृवंशीय समाजों में स्त्री को सम्मान प्राप्त है तथा पुरुषों का दमन भी नहीं होता. अर्थात ये समाज स्त्री-पुरुष सम्बन्ध के संदर्भ में आधुनिक मूल्यों के अधिक निकट है।"[i] वहीं पितृसत्तात्मक समाज पुरुषों के वर्चस्व और महिलाओं के दमन को प्रश्रय देता है यह तथ्य भी छुपा नहीं है। पारंपरिक रूप से ही संपत्ति और वंश स्त्री के नाम रहने से खासी महिलाएं पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत मज़बूत स्थिति में हैं। हाँ स्त्री के राजनीतिक हकों के मामले में यह समाज पिछड़ा हुआ है। Thomas Menamparampil लिखते हैं- "सदियों के अनुभव ने खासी महिलाओं को किफायती और जिम्मेदार प्रशासक बना दिया है। यद्यपि महिलाएं घर की कुशल रक्षिका है फिर भी वे राजकीय मामलों में कभी भी सक्रिय भूमिका में नहीं रहीं. इस क्षेत्र में पुरुषों का पूरी तरह से वर्चस्व था."[ii] निश्चित रूप से राजनीतिक मसलों में स्त्री के दखल पर रोक प्रगतिशील विचार नहीं कहा जा सकता. हर समाज में कुछ न कुछ कमियाँ होती हैं। खासी समुदाय में स्त्री को प्राप्त अन्य अधिकारों ने अपनी

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। और कह सकते हैं कि स्त्री और पुरुषों के अपने-अपने अधिकार अंतत: कमोबेश एक संतुलन बनाने की कोशिश करते है। 'रेडिकल इक्वलिटी' तो नहीं किन्तु खासी समाज का ढांचा ऐसा है जिसमें स्त्री और पुरुष अपेक्षाकृत संतुलित और समानता का जीवन जीते हैं। और यह निश्चित रूप से प्रगतिशील व्यवहार है। खासी समुदाय में स्त्रियों पर इतनी चर्चा का एक कारण है खान अब्दुल गफ्फार खान का यह प्रचलित कथन- "अगर यह जानना हो कि कोई संस्कृति कितनी सभ्य है तो यह देखिये कि वह अपनी औरतों के साथ कैसा व्यवहार करता है।"[iii]

प्रगतिशीलता का अर्थ ऐसी वैचारिकता से है जिसका उद्देश्य सामूहिक हितों की सुरक्षा तथा अन्यायपूर्ण परम्पराओं का विरोध है। प्रगतिशील विचार बराबरी की खोज में रहता है। जो रूढ़ हो चुका है उसके खिलाफ आवाज उठाता है। इस लिहाज से खासी जनजाति की मातृवंशीयता प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रगतिशील विचारों की स्थापना करती दिखती है। और इस व्यवस्था की स्थापना में एक निर्णायक भूमिका निभाती है यहाँ की लोककथाएँ. संपत्ति का अधिकार सबसे छोटी बेटी को मिले इसके लिए खासी समाज ने मिथक का विकास किया. कथा का सार यह है[iv] कि *का रेम्यू* अर्थात धरती की मृत्यु के बाद उनकी अन्त्येष्टी की जिम्मेदारी उनकी बेटियों पर आती है। सबसे बड़ी बेटी सूरज ने सबसे पहले कोशिश की. पूरी ताकत लगा देने के बाद भी वह सफल नहीं हुई. इसके बाद अन्य पुत्रियां हवा, प्रकृति और पानी आती हैं और अपनी कोशिशें करती हैं लेकिन वे भी सफल नहीं होतीं. फिर आती है उनकी सबसे छोटी बेटी अग्नि. उसने सफलता पूर्वक अपनी माँ का रेम्यू की अन्त्येष्टी को संपन्न किया. संभवत: तभी से खासियों में माँ की वारिस सबसे छोटी बेटी को बनाने की प्रथा शुरू हुई. इस कथा का व्यवस्था की स्थापना और स्थायित्व में योगदान रहा होगा इससे इंकार नहीं किया जा सकता. इस मिथकीय कथा ने खासी आदिवासी समुदाय की स्त्रियों की बेहतर स्थिति को सुनिश्चित करने का प्रयास किया है। परंपरागत रूप से परिवार में फैसले लेने का हक़ सबसे बड़े मामा और पिता को होते हुए भी इस प्रथा ने स्त्री के हिस्से भी कुछ अतिरिक्त अधिकार दिए जो संतुलन की तरफ इशारा करता है।

भारत में "अतिथि देवो भव:" मूल्य के रूप में काफी प्रचलित है। यह भारत सरकार के पर्यटन विभाग के प्रचार कार्यक्रम का हिस्सा भी रह चुका है।[v] अतिथि सत्कार के मूल्य का निर्वाह कमोबेश हर संस्कृति में किया जाता है। लेकिन अभावग्रस्तता की स्थिति में मेजवान पर मेहमान की खातिरदारी में आने वाली विपत्ति पर खुल कर चर्चा नहीं होती. अपने समाज में मैंने देखा है किसी मेहमान के अचानक आ जाने पर घर में उनके बेहतर आव-भगत के लिए लोग बहुत मुश्किलों का सामना करते हैं, लेकिन अपनी कोशिशों में कोई कमी नहीं रखते. यह भावनात्मक हो सकता है। लेकिन व्यवहारिक रूप से जिनकी आर्थिक स्थिति स्वयं अच्छी नहीं वे मर्यादा की रक्षा के लिए अतिरिक्त आर्थिक बोझ उठाते हैं। जो अमीर हैं, उनके लिए तो कोई मसला नहीं. जो अभाव में हैं वे अनावश्यक रूप से इस मूल्य को ढोते हैं। लेकिन इस मामले में खासी समाज में प्रगतिशीलता का एक बेहतरीन उदाहरण देखने को मिलता है। परम्परागत रूप से वे मेहमानों का स्वागत *क्वाई-तम्पौव* (पान) से करते हैं। यही समाज के हर व्यक्ति के लिए मेहमान के सम्मान का स्वीकृत साधन है। पान की सर्वसुलभता के परिप्रेक्ष्य में इसके सामाजिक रूप से अतिथि सम्मान के प्रतीक के रूप स्थापना बहुत ही प्रगतिशील समाज का पता देती है। इसके लिए खासी समुदाय में एक लोककथा प्रचलित है[vi]- दो बहुत ही जिगरी दोस्त थे, उनमें से एक बहुत अमीर था और दूसरा बहुत गरीब. लेकिन इसका उनकी दोस्ती पर कोई प्रभाव नहीं था. गरीब दोस्त अमीर दोस्त के यहाँ अक्सर जाता और वहां उसकी बहुत अच्छी खातिरदारी होती. एक दिन उसने अपने अमीर दोस्त को अपने घर आमंत्रित किया. दोस्त ने आमंत्रण सहर्ष स्वीकार किया. एक दिन अचानक अमीर दोस्त गरीब दोस्त के घर पहुँच गया. उनके घर में उसके स्वागत के

लिए कुछ भी नहीं था. आस–पड़ोस में भी सभी उसी स्थिति में थे, किसी से कोई मदद नहीं मिली. वह शर्म से खुद को धिक्कारने लगा कि वह अपने मित्र का सत्कार नहीं कर पाया और रसोई में पड़े चाकू से उसने आत्महत्या कर ली. उसकी पत्नी ने भी इस घटना के दु:ख से उसी चाकू से अपनी जान दे दी. काफी देर हो जाने की वजह से जब उसका दोस्त रसोई आता है तो खाली पड़े बर्तनों से सारा माजरा समझ जाता है। अपने आपको इस दुखद घटना का कारण मानते हुए उसने खुद को भी उसी चाक़ू से मार लिया. उसी घर में एक चोर छिपा हुआ था. उसने सोचा अगर मैं बाहर निकला और लोगों ने पकड़ लिया तो मुझे ही इसका अपराधी माना जाएगा, और उसने भी उसी चाक़ू से आत्महत्या कर ली. इस प्रकार से चार लोगों की जान चली गयी. कथा कहती है कि स्रष्टा *यू ब्लेई* ये सब देख रहे थे. उसने कहा "आदमियों को अपने दोस्त की खातिरदारी खाने पीने की महंगी वस्तुओं से नहीं करनी चाहिए क्योंकि गरीब आदमी ऐसा नहीं कर सकते. इसलिए मैं दोस्तों की खातिरदारी के लिए दूसरी ऐसी वस्तुएं बनाऊंगा जो सस्ती और सुलभ हों." और इस प्रकार उसने अमीर दोस्त रूपी सुपाड़ी, गरीब दोस्त रूपी पान का पत्ता, पत्नी रूपी चूना और चोर रूपी तम्बाकू बनाया.

गौर करने लायक है कि दोस्त की खातिरदारी सम्बन्धी इस लोककथा में मर्यादा पालन के दबाव के कारण चार लोगों की जान चली जाती है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ यह समझा जा सकता है कि आतिथ्य सत्कार की मर्यादा पालन की परम्परा से खासी समाज बहुत व्यथित रहा होगा. "हालांकि प्राचीन खासी समुदाय के पास नैतिक शिक्षाओं को संग्रहित करने के लिए कोई लिपि नहीं थी, फिर भी उन्होंने अपनी नैतिक मानदंडों को लोककथाओं के माध्यम से बनाए रखा."[vii] यानि पूरे समाज ने मिल कर एक ऐसा फैसला लिया जो सबके सामर्थ्य में है, और इस लोककथा का विकास हुआ. गरीब हो या अमीर सबके लिए सुलभ और बराबर महत्व के सामूहिक प्रतीक की स्थापना प्रगतिशील व्यवहार का बेहतरीन उदाहरण तो है ही आदिवासी समाज के नैसर्गिक साम्यवादिता का भी प्रतीक है।

खासी लोककथाओं में *यू मनिक रायतांग* लोककथा बहुत लोकप्रिय है। वाचिक रूप में मानस में बसी इस कथा का 1899 ई. में पहली बार लिपिकरण होने के बाद से अब तक इसपर नाटक, कविता, लघु उपन्यास, दो फिल्में बन चुकी हैं।[viii] यह लोकप्रिय कथा एक प्रेम कथा है जिसमें हम आम खासी मानस में सहज प्रेम के प्रति करुणा का भाव देखते हैं। राजदरबार में भले ही इस तरह के प्रेम के विरुद्ध कठोर नियम रहे हों, आम खासी सामूहिक रूप से इस प्रेम को स्वीकार करते हैं। उसके दर्दनाक अंत पर रोते हैं और इस प्रकार के प्रेम के सम्मान में एक स्थायी प्रतीक को रच कर उसकी याद को स्थायी बना लेते हैं। कथा का सार इस प्रकार है[ix]– एक *सीएम* (राजा) बहुत दिनों से अपने राज्य के भ्रमण पर निकला हुआ था. वर्षों बीत गए लेकिन उसकी कोई खबर नहीं आ रही थी. उसकी युवा रानी अकेलेपन के कारण अनिद्रा की शिकार हो गयी. एक रात उसने दूर से आती बांसुरी की बहुत ही मधुर तथा हृदयस्पर्शी धुन सुनी. वह उस धुन के पीछे चल पड़ी. बांसुरी बजाने वाला यू मनिक रायतांग था. रायतांग अनाथ और बहिष्कृत था. पूरे दिन राख मिट्टी से सने रहने वाला रायतांग रात में अपने सुन्दर पोशाक में अद्भुत लग रहा था. रानी को उससे प्रेम हो गया. उसने शुरुआत में मना किया लेकिन रानी के अटूट प्रेम को देखने के बाद उसे भी प्रेम हो गया. कुछ समय के बाद राजा के वापस आने का समाचार आया. रानी एक बेटे को जन्म दे चुकी थी. हर ओर सन्नाटा छा गया कि राजा क्या फैसला लेगा. राजा को यह बात नागवार गुजरा और उसने राज्य के हर पुरुष को एक केला लेकर महल में बुलाया. कहा गया कि बच्चा जिससे केला लेगा वही उसका पिता होगा. बच्चे ने किसी से केला नहीं लिया. किसी को उम्मीद नहीं थी फिर भी याद करके रायतांग को भी बुलाया गया. बच्चा उसे देखते ही हँसने लगा और केला ले लिया. राजा ने रायतांग को ज़िंदा जलाने की सजा सुनाई. अगले दिन चिता तय्यार की गयी. रानी को महल में बंद कर दिया गया. रायतांग सुन्दर पोशाक में सजा हुआ बांसुरी बजाता हुआ आता है। वहां मौजूद लोगों की भीड़ यू मनिक की मनोहारी छवि, उसके अप्रतिम संगीत तथा उसके प्रेम के त्रासद अंत से अभिभूत हो रो पड़ी. रानी भी बिल्ली के

पैरों में पाजेब बाँध खिड़की से कूद उसी चिता के पास आ गयी. मनिक ने अपनी बांसुरी को पास में ही जमीन में उलटा गाड़ दिया. और दोनों अग्नि में कूद गए. हर दिशा में रुदन-चीत्कार और हलचल मच गयी. उस पहाड़ी पर जिस जगह उन दो प्रेमियों ने मृत्यु का वरण किया था, आज भी वहाँ पर उल्टे बांस के झुरमुट विद्यमान हैं। ये नीचे की ओर बढ़ते हैं। कहते हैं, ये बांस उसी बांसुरी से जन्मे हैं

इस कथा में दरबार की कठोरता अमानवीय है। लोक इसका सीधा विरोध कर पाने की स्थिति में नहीं है। लेकिन अपनी भावना के साथ वह इन प्रेमियों के साथ ही है। रानी के अकेलेपन का जिम्मेदार राजा था. उसकी जरूरतों से खासी समाज वाकिफ था. मनिक के साथ उसके सम्बन्ध को समाज ने अपनी सामूहिक स्वीकृति अपने सामूहिक रुदन से दे दी. खासी जनजाति के प्रगतिशील विचार का यह खूबसूरत पक्ष निश्चित रूप से महत्वपुर्ण है। इतना ही नहीं इस प्रेमकथा से जुड़ा उल्टे बांस के झुरमुट वाले प्रतीक के माध्यम से यह आज भी खासी समाज में सहज मानवीय प्रेम की स्वीकार्यता को स्थापित करती है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि खासी जनजाति ने जिस सामाजिक व्यवस्था को आत्मसात किया है वहीं से स्वाभाविक रूप से प्रगतिशीलता उनके व्यवहार में समा गयी. स्त्री को पारंपरिक रूप से राजनीतिक अधिकार नहीं मिलना निराशाजनक है। लेकिन आर्थिक विशेषाधिकार से इसकी क्षतिपूर्ति होती हुई दिखती है। इस जनजाति के मूलभूत गुण में समानता की इच्छा देखी जा सकती है। स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब सभी के समानता की यह भावना निचित रूप से प्रगतीशील विचार का उदाहरण है।

सन्दर्भ सूची:

[i]. शर्मा श्रीनाथ, 'जनजातीय समाजशास्त्र' मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 2005 पृष्ठ 22

[ii]. Thomas Menamparampil, 'An Introduction to North-East India', Peace Centre, Guwahati, 2013, Page 4

[iii]. इंटरनेट पर उपलब्ध प्रचलित कथन

[iv]. खरमाओफिलांग डेज्मंड, गुप्ता रमणिका (अनुवाद), 'महा माँ धरती(रेम्यू)', गुप्ता रमणिका (संपा.) पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 29-33

[v]. Shah Niranjan, 'Athithi devo bhava is an expression from Taittirya Upnishad', www.indiatribune.com

[vi]. फिल्मिका, 'क्वाई-तम्पौव', गुप्ता रमणिका (संपा.) पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 144-145

[vii]. Mawrie Barnes L, 'the khasis and their natural environment' Vendrame Institute Publication, Shillong, 2009 Page 63

[viii]. Lamare Sylvanus, 'Orality and Beyond: the story of U Manik Raitong', Sen Soumen (editor) 'orality and beyond' sahitya akademi, new delhi, 2007, page 6

[ix]. सावियान विजोया,'यू मनिक रायतांग, कैस अकील (अनुवाद) गुप्ता रमणिका (संपा.) पूर्वोत्तर आदिवासी सृजन मिथक एवं लोककथाएं' नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2013, पृष्ठ 149-152